शांति के लिए शिक्षा

अरविन्द गुप्ता

'हरेक बंदूक का उत्पादन, हरेक युद्धपोत का निर्माण, हरेक रॉकेट का दागा जाना दरअसल भूखे और असहाय लोगों के साथ एक क्रूर चोरी है। हथियारों पर महज पैसा ही नहीं खर्च होता उन पर मेहनतकशों का पसीना, वैज्ञानिकों का श्रम और बच्चों की उम्मीदें भी तबाह होती हैं। जिंदगी जीने का यह सही तरीका नहीं है।'

अमरीकी राष्ट्रपति इजिनहावर के भाषण का अंश (16 अप्रैल 1953)

दुनिया कंपटीशन से भरी पड़ी है। हर तरफ प्रतिस्पृद्धा है। इस रेस में 'सबसे चुस्त ही जिंदा बचेंगे,' वैज्ञानिक यह दावा करते हैं। हिटलर ने 60 लाख यहूदियों के साथ-साथ सारे 'विकलांगों' को भी गैस की भट्टी में ठूंसा। कारण? 'विकलांग' प्रगति के रास्ते में रोड़ा थे। समाज अपने सबसे 'कमजोर' सदस्यों की कैसी देखभाल करता है, क्या यह उसकी उदारता का मापदंड नहीं होना चाहिए?

चिंतकों और शिक्षाविदों ने इस बारे में काफी सोचा है। इंग्लैंड में समरहिल स्कूल दुनिया का सबसे मुक्त स्कूल माना जाता है। उसके संस्थापक ए एस नील ने 'शांति' के लिए शिक्षण पर गंभीरता से सोचा। उन्होंने दोनों महायुद्धों की तबाही को करीबी से देखा और झेला था। इसलिए शांति के लिए शिक्षा पर उनका विशेष बल था। जीवन विरोधी पारिवारिक 'बंधनों' को उन्होंने सामाजिक क्लेशों का कारण बताया। बच्चों को पालने से ही द्वेषपूर्ण, प्रतिक्रियावादी जहर पिलाया जाता है। शोर मत करो, हस्तमैथुन बुरी बात है, झूठ बोलना पाप है, चोरी गलत बात है आदि। बच्चों को तमाम गलत बातों पर 'हां' मिलाने को मजबूर किया जाता है। जैसे, बड़ों का आदर, धर्म का पालन, शिक्षकों का आज्ञा पालन, कानून का पालन आदि। यानि किसी चीज पर सवाल मत उठाओ। बस आदेश सुनो और आज्ञा मानो। नील पर प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक विल्हम राईख का गहरा प्रभाव था। राईख सिग्मंड फ्रॉइड के एक विद्रोही शिष्य थे।

शांति के लिए शिक्षण का मतलब प्रतिस्पृद्धा (कम्पटीशन) और सहयोग (कूऑपरेशन) के बीच के द्वंद को समझना है। चीटिंयों की कॉलोनियां अन्य कॉलोनियों के साथ जमकर लड़ती हैं परंतु उनकी अपनी कॉलोनी में गजब का आपसी सहयोग दिखाई देता है। दो साम्राज्य आपस में भिड़ते हैं परंतु प्रत्येक सेना के सिपाही आपस में सहयोग करते हैं। किसी ग्रुप और इकाई में हम प्रतिस्पृद्धा और सहयोग का द्वंद महसूस करते हैं - यह खेल के मैदान में, स्कूल में, हर जगह। हरेक खेल में भी यह दोनों पहलू मौजूद होते हैं। फुटबॉल में दो टीमें एक-दूसरे से भिड़ती हैं परंतु हर टीम के सदस्यों का आपस में तालमेल होता है। परंतु फुटबॉल जैसे रोचक खेल में टीमों का आपसी और अंदरूनी सहयोग दोनों जरूरी हैं। यह अनिवार्य है कि दोनों टीमें खेल के नियमों को मानें। नहीं तो खेल क्या खाक होगा, बस दुलत्तियां चलेंगी!

बच्चे बिना सिखाए ही बहुत कुछ सीख जाते हैं। प्रेम, सहनशीलता, सहिष्णुता, करुणा और शांति जैसे मूल्य केवल उपदेश बनकर न रह जाएं इसलिए यह जरूरी है कि बच्चे असली जिंदगी में उन्हें अनुभव करें। खेल में हारने वाले का मजाक बनाना गलत है। आपसी भिन्नताओं का आदर जरूरी है। हम खुशनसीब हैं कि भारत जैसे देश में हमें भिन्न-भिन्न धर्मों, लोगों, भाषाओं, संगीत और भोजन को अनुभव करने का मौका बहुत आसानी से मिल जाता है। इससे दिमागी संकीर्णता घटती है और व्यापकता बढ़ती है। अमन और शांति की एक पुख्ता नींव रखने के लिए हम अपने बच्चों को आम स्कूलों में भेजें। किसी संप्रदाय-विशेष, वर्ग-विशेष, सिर्फ लड़कों या सिर्फ लड़कियों वाले स्कूल, या फिर 'गिफ्टिड' बच्चों के स्कूलों में न भेजें। साधारण आम स्कूलों में ही बच्चे एक-दूसरे के साथ सहनशीलता से जीने का सबक सबसे अच्छी तरह सीखेंगे।

सतही स्तर पर शांति का मतलब युद्ध का बंद होना समझा जाता है। इसके अनुसार शांति दो युद्धों के बीच का बस अंतराल होती है। पर क्या इसे शांति माना जा सकता है? असली शांति का मतलब ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करना है जिनसे समाज में युद्ध अनावश्यक और असंभव हो जाए। पिछले 10,000 सालों में युद्ध लड़े गए हैं। इतिहास इसका साक्षी है। इन युद्धों का मकसद आतंक द्वारा किसी समस्या का समाधान खोजना नहीं था। इन युद्धों का उद्देश्य साम्राज्य का विस्तार करना था। जब हम सर्तकता से अपनी विस्तारवादी प्रवृत्तियों पर रोक लगाकर एक शोषणहीन समाज की संरचना करेंगे तभी दुनिया में स्थाई शांति कायम होगी।

दस साल पहले संयुक्त राष्ट्र संघ ने दुनिया के सभी स्कूलों से शांति पर दो-दो पंक्तियों की कविताएं लिख भेजने का आग्रह किया था। इन कविता पुष्पों को पिरोकर बाद में एक लंबी शांति-कविता की फूलमाला बनाई गई।

38 देश के बच्चों ने कविताएं भेजीं। संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव कोफी अन्नान ने अपने आमुख में लिखा, 'इन विवेकशील बच्चों को इस बात का अच्छा अहसास है कि शांति का मतलब युद्ध बंदी से कहीं अधिक गहरा है। बच्चों को पता है कि असली शांति हृदय से उत्पन्न होती है - हम दूसरों को किस अंदाज से देखते हैं और हम उनका कितनी इज्जत से बर्ताव करते हैं।'

कुछ दिल को छूने वाली वाली कविताएं यहां पेश हैं:

हम नहीं चाहते कि हमारे पिता फौज में भरती हों और दूसरे बच्चों के पिताओं पर गोली चलाएं।
एंगब्रोटस्कोलन, स्वेटडाबर्ग, स्वीडन

हम हथियार छोड़कर शब्दों से लड़ें
युद्ध बंद हों और हमारी आवाज गूंजे
पब्लिक स्कूल, रिचमंड, अमरीका

हम आपस में लेन-देन सीखें
प्रेम से वैमनस्य को जीतें
सैली मॉरो एलीमेंट्री, यू टी, अमरीका

आज बहुत से लोग सामूहिक रूप से जंग और तबाही को रोकने में लगे हैं। इसलिए शांति के लिए शिक्षा का मसला और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। अगर स्कूल शांति वाली कविता की लड़ी को आगे बढ़ायेंगे तो यह एक सुंदर प्रकल्प होगा।